हिन्दी ग्राम

भाषा समन्वयक

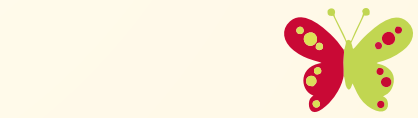

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

साथियों,
सादर वन्दे,

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

भारतेंदु हरीशचंद्र जी की पंक्तियाँ भारत के भाग्य विधाता होने और राष्ट्र के विश्वगुरु बनने की यात्रा का प्रथम पड़ाव मानी जा सकती हैं। क्योंकि एक राष्ट्र का संपूर्ण गौरव उस राष्ट्र के निवासियों में निहित भाव और संस्कृति के प्रति समर्पण से ही निर्मित होता हैं। भारत एक जनतांत्रिक राष्ट्र हैं, जहाँ सभी धर्म,वर्ग,जाति, भाषा के लोग निवास करते हैं। भरत का भारत हिन्दी के अभिमान से शोभित हैं। परंतु दुर्भाग्य है इस राष्ट्र का कि स्वतंत्रता के लगभग ७ दशक बीत जाने के बाद भी राजनैतिक जंजीरों के कुत्सित प्रयासों से यह राष्ट्र अपनी मातृभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाया। जिस तरह इस राष्ट्र में राष्ट्रगान, राष्ट्र चिन्ह, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गीत, राष्ट्रीय पशु-पक्षी सब कुछ है सिवा राष्ट्र भाषा के।

राष्ट्रभाषा की एक आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि जिस तरह से राष्ट्र के प्रतिनिधित्व ध्वज, गीत, गान, पशु, पक्षी आदि के अपमान का जो दंड संवैधानिक रूप से निर्धारित है वह राष्ट्रभाषा के अपमान का भी हो। ताकि एक राष्ट्र में भाषा के कारण दूसरे राष्ट्र का जन्म ना हो सके। भारत की संस्कृति प्रशांत महासागर के समान गहरे हृदय वाली है, परंतु यहाँ हिन्दी का अपमान हो यह हिंद के निवासियों के लिए असहनीय भी हैं। साथ ही देश की सांस्कृतिक अखंडता को बचाने और संस्कृति के संरक्षण हेतु भी जनभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनना चाहिए।

इसी दिशा में हिन्दी की अस्मिता की रक्षा के साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलवाने हेतु भारत के हृदय मध्यप्रदेश में माँ अहिल्या की नगरी इन्दौर से मातृभाषा उन्नयन संस्थान का गठन किया। इसके अंतर्गत हिन्दीग्राम, मातृभाषा.कॉम व अंतराशब्दशक्ति.कॉम प्रकल्प बनाये गए। संस्थान का मूल उद्देश्य हैं भारत की जनभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलवाया जाए, हिन्दी रोजगारमूलक भाषा बने।

संस्थान द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्र में 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' संचालित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य जनता है कि जनमानस अपने जीवन की सबसे छोटी किन्तु महत्वपूर्ण इकाई हस्ताक्षर हिन्दी में करके हिन्दी प्रेम प्रदर्शित करें। यदि आप भी अँग्रेजी में हस्ताक्षर करते है तो केवल एक छोटा-सा परिवर्तन कीजिए, यकीन मानिए आपकी एक आदत बदलने से हमारी मातृभाषा हिन्दी राष्ट्र भाषा का गौरव हासिल कर सकेगी। 'एक कदम इंडिया से भारत की ओर' के अंतर्गत हस्ताक्षर बदलो अभियान में आपकी सहभागिता सुनिश्चित करेगी। इसी के साथ आप भाषासारथी के रूप में संस्थान से जुड़कर अपने ग्राम, नगर, प्रान्त में हिन्दी के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं।

आओं, हिंद के गौरव की पुनर्स्थापना की जाएँ, मिलकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाएँ।

जय हिन्द - जय हिन्दी

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
राष्ट्रीय अध्यक्ष - मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- हिन्दीग्राम

'जब तक हिन्दी को बाजार नहीं अपनाता तब तक लोगों का आकर्षण हिन्दी के प्रति कम रहेगा, जबकि भारत विश्व का दूसरा बड़ा बाजार है ।'

हिन्दी के विस्तार की यात्रा के सहभागी बनें

मित्रों,
'नमन'

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी,
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।

हम राष्ट्रीय जीवन के यथार्थ में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह घोषणा १९४९ से लेकर आज तक यानि लगभग पूर्ण होती पूरी एक शताब्दी में भी साकार नहीं कर पाए। लार्ड मैकाले का मानना था कि जब तक संस्कृति और भाषा के स्तर पर गुलाम नहीं बनाया जाएगा, भारतवर्ष को हमेशा के लिए या पूरी तरह, गुलाम बनाना संभव नहीं होगा। जबकि गांधी जी ने स्वाधीनता संग्राम छेड़ने के बाद अपने अनुभवों से यह समझा और माना कि स्वाधीनता संग्राम को पूरे देश में एक साथ आगे बढ़ाया जा सकता है, तो केवल हिंदी भाषा में, क्योंकि हिंदी कई शताब्दियों से भारत की संपर्क भाषा चली आ रही थी। आज भी पूरे विश्व में एक भी ऐसा राष्ट्र नहीं है, जहाँ विदेशी भाषा को शासन की भाषा बताया गया हो, सिवाय भारतवर्ष के। हजारों वर्षों की सांस्कृतिक भाषिक परंपरावाला भारतवर्ष आज भी भाषा में गुलाम है और आगे इससे भी बड़े पैमाने पर गुलाम बनना है। यह कोई सामान्य परिशिष्ट नहीं है। भाषा में गुलामी के कारण पूरे देश में कोई राष्ट्रीय तेजस्विता नहीं है और देश के सारे मूर्धन्य चिंतक और विचारक विदेशी भाषा में शासन के प्रति मौन है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा के सवालों को जैसे एक गहरे कोहरे में ढँक दिया गया है। राष्ट्रभाषा के सवाल पर राष्ट्रव्यापी बहस के कपाट जैसे सदा-सदा के लिए बंद कर दिए हैं। सारी प्रादेशिक भाषाएँ भी अपने-अपने क्षेत्रों में बहुत तेजी से पिछड़ती जा रही हैं। शासन की भाषा के मामले में अंतर्विरोध भी तभी पूरी तरह उजागर होंगे, जब विदेशी भाषा प्रादेशिक भाषाओं की संस्कृतियों के लिए भी खतरनाक सिद्ध होंगी। प्रादेशिक भाषाओं की भी वास्तविक शत्रु अंग्रेजी ही है, लेकिन देश के अंग्रेजीपरस्तों ने कुछ ऐसा वातावरण निर्मित करने में सफलता प्राप्त कर ली है जैसे भारतवर्ष की समस्त प्रादेशिक भाषाओं को केवल और केवल हिंदी से खतरा हो। फिर भी आशा की एक किरण आज भी कायम है। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने अपने एक निबंध में लिखा है, जिस हिन्दी भाषा के खेत में ऐसी सुनहरी फसल फली है, वह भाषा भले ही कुछ दिन यों ही पड़ी रहे, तो भी उसकी स्वाभाविक उर्वरता नहीं मर सकती, वहाँ फिर खेती के सुदिन आएँगे और पौष मास में नवान्न उत्सव होगा।सचमुच उसी पौष मास की आशा लिए माँ अहिल्या की नगरी इंदौर की पावन और उर्वर भूमि में आंदोलन का एक बीज रोपा है 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान' व हिन्दीग्राम ने।

एक आंदोलन मातृभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु
भारत को भाषा के सक्षमीकरण के माध्यम पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु
एक मुहिम हस्ताक्षर बदलकर हिन्दी को समृद्ध और सशक्त समर्थन देने हेतु
हिन्दी को व्यवहार ही नहीं व्यापार की भाषा बनाने हेतु
हिन्दी साहित्य को सचमुच नए भारत का दर्पण बनाने हेतु

और इन सभी बिंदुओं पर कार्य कर रही संस्था के अंतर्गत गठित इकाईयाँ है - मातृभाषा.कॉम व अन्तरा-शब्दशक्ति
इन संस्थाओं के कार्य का आधार यह सोच है कि 'सृजन' एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें नये विचार या उपाय का जन्म होता है। वैज्ञानिक मान्यता यह है कि सृजन का फल में मौलिकता एवं सम्यकता दोनों विद्यमान होते हैं। और सृजन में क्रांति उत्पन्न करने की क्षमता भी होती है।
तो आइए सृजन की इस शक्ति को आंदोलन की शक्ति के रूप में जोड़ने के लिए जुड़ें और सहयोगी बनें।

डॉ. प्रीति सुराना
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- अन्तरा-शब्दशक्ति

हिन्दी ग्राम क्या है ?

हिन्दी ग्राम शब्द में ही संपूर्ण परिकल्पना समाहित है, एक ग्राम जो सबसे छोटी ईकाई होकर भी समग्र को समेट कर संचालित होता है, उसी उद्देश्य को हिन्दी ग्राम में सहेजा जा रहा है।

हिन्दी ग्राम का मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा को रोजगार मूलक व व्यवसाय से जोड़ना है, क्योंकि विश्व की कोई भी भाषा जैसे अंग्रेजी, जापानी, चाईनीज, फ्रैन्च आदि जब तक बाजार से नहीं जुड़ी तब तक उसका विकास सीमित ही रहा है। उसी तरह संस्कृत बाजार से दूर रही तो उसे विलुप्तता की कगार पर ला पहुँचाया, यही हाल हिन्दी का भी हो रहा है। परन्तु हिन्दी को बाजार मूलक बनाने और उसमें रोजगार के अवसर लाने के उद्देश्य से हिन्दी ग्राम की शुरूआत की गई है।

मूलतः हिन्दी ग्राम के माध्यम से विश्व स्तर पर हिन्दीभाषियों के लिए रोजगार के अवसरों को ढूंढकर जानकारी उपलब्ध करवाना, हिन्दी का प्रचार करना, हिन्दी में शिक्षा ग्रहण करने के लिए लोगों को प्रेरित करना, हिन्दी शिक्षण से रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम संचालित करना, लेखन व रचनाकारों को जोड़ना, भारत में हिन्दी के प्रति प्रेमवर्धन करना, पर्यटन से राजस्व प्राप्त करने वाले राज्यों में हिन्दी का प्रसार कर वहां हिन्दी भाषी पर्यटकों की सहायता करना तथा राज्यों में पर्यटको का रूझान बढ़ाना और राज्यों की राजस्व वृद्धि करना, भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु हिन्दी का विस्तार करना, हिन्दी की भूमिका से भारतीयता के प्रति जागरूक विदेशियों को आकर्षित करना और देशभर में हिन्दी से लोगों को जोड़ने के लिए हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित करना है ।

देश के लगभग १० से अधिक राज्यों में बहुतायत में हिन्दी भाषी लोग रहते हैं, अनुमानित रुप से भारत में ४० फीसदी से ज्यादा लोग हिन्दी भाषा बोलते है। किंतु दुर्भाग्य है कि हिन्दी को जो स्थान शासकीय तंत्र से भारत में मिलना चाहिए वो कृपापूर्वक दी जा रही खैरात है बल्कि हिन्दी का स्थान राष्ट्र भाषा का होना चाहिए न की राजभाषा का। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राजभाषा' के लिए बताये थे-

- अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
- उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।
- यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।
- राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।
- उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा खरी तो उतरी किंतु राष्ट्रभाषा होना हिन्दी के लिए गौरव का विषय होगा।

हिन्दी ग्राम की कार्य योजना:

- हिन्दी के रचनाकारों को मंच उपलब्ध करवाना जहाँ वे अपनी लेखनी सहज रुप से प्रकाशित कर सकें।
- हिन्दी को रोजगार मूलक बनाने की ओर कार्य करना तथा उपलब्ध रोजगार की जानकारियों को साझा करना।
- हिन्दी भाषा में शिक्षा के महत्व को बढ़ाना व विद्यालय-महाविद्यालयों में कार्यशाला लगाना।
- हिन्दी शिक्षण तथा शिक्षा के लिए प्रेरणा देना व हिन्दी शिक्षा हेतु छात्रवृत्तियों की जानकारी साझा करना।
- हिन्दी में शोध करने के लिए शोधार्थियों को सहायता करना।
- हिन्दी चलचित्रों (फिल्मों) के शीर्षकों को हिन्दी में ही लिखने के लिए निदेशकों को प्रेरित करना।
- गैर हिन्दी राज्यों में हिन्दी भाषी लोगों की हिन्दी में मदद करना और हिन्दीभाषी लोगों को आपस में जोड़ना।
- हिन्दी लेखकों की पुस्तकों का निशुल्क प्रचार करना ताकि पुस्तक बिक्री में वृद्धि हो।
- हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों की कृतियाँ इंटरनेट पर सहेजना।
- हिन्दी समाचार संस्थानों में हिन्दी संरक्षण अभियान चलाकर हिन्दी की परिपक्वता लाना।
- हिन्दी को जनसामान्य की भाषा बनाकर हिन्दी के प्रति उत्तरदायित्व तय करना।
- शासकीय कार्यालयों की व्यवहारिक भाषा हिन्दी करवाना।

संस्थापकः डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

डॉ. अर्पण जैन मध्यभारत की आई टी कंपनी सेंस टेक्नॉलाजीस के संस्थापक हैं। यह कार्पोरेशन मध्यभारत में वेबसाइट, मोबाइल एप, पोर्टल बनाने वाली कंपनियों में शामिल है। इसके अलावा अर्पण ने खबरहलचल.कॉम, केएनआईइंडिया.कॉम, इन्डियनरिपोर्टरस.कॉम आदि सभी कंपनियों की आधारशिला रखी। राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के अंतर्गत एसएटीएम कॉलेज से कम्प्यूटर साइंस में बेचलर ऑफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही अर्पण जैन ने सॉफ्टवेयर व वेबसाईट का निर्माण शुरू कर दिया था। उन्होंने फॉरेन ट्रेड में एमबीए किया, तथा पत्रकारिता के शौक के चलते एम. जे. की पढ़ाई भी की है। समाचारों की दुनिया ही उनकी असली दुनिया थी, जिसके लिए उन्होंने सॉफ्टवेयर के व्यापार के साथ ही खबर हलचल वेब मीडिया की स्थापना की और इसे भारत की सबसे तेज वेब चेनल कंपनियों में से एक बना दिया। साथ ही 'भारतीय पत्रकारिता और वैश्विक चुनौतियाँ' पर ही अर्पण ने अपना शोध कार्य सम्पन्न किया है व इन्होंने देश के कुछ दिग्गज संपादकों के साथ भी लंबे समय तक चलने वाली, कामयाब साझेदारी की। अर्पण जैन 'अविचल' खबर हलचल न्यूज के संपादक है और पत्रकार होने के साथ साथ, शायर और स्तंभकार भी है। मध्यप्रदेश के धार जिले की कुक्षी तहसील में पले-बढ़े और इंदौर को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। अर्पण ने 'मेरे आंचलिक पत्रकार' व काव्य संग्रह 'काव्यपथ' नाम से किताब भी लिखी है। साथ ही साझा काव्य संग्रह 'मातृभाषा-एक युगमंच', 'स्पंदन', साझा कथा संग्रह 'कथासेतु' व साझा आलेख संग्रह 'विचार मंथन' भी प्रकाशित हुआ है। भारत का पहला पत्रकारों के लिए बनाया गया सोशल नेटवर्क और पत्रकारिता का विकीपीडिया www.IndianReporters.com भी अर्पण जैन द्वारा ही संचालित किया जा रहा है।

भ्रमण भाषः +91 98938 77455 । अणुडाकः arpan455@gmail.com । अंतरताना: www.arpanjain.com

सहयोगी साथी

डॉ. प्रीति सुराना वारासिवनी, बालाघाट (मप्र) एक छोटे से कस्बे में रहती हैं, बीकॉम, एम.ए. हिंदी साहित्य के साथ एक्यूप्रेशर का डीएटी किया है। 'अंतरा- शब्दशक्ति' की संस्थापक और संपादक होने के साथ साथ लेखिका भी है। गद्य और नई कविता के साथ विभिन्न विधाओं पर भी लेखन सतत जारी है। आपकी १२ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

डॉ. प्रीति सुराना

नसरीन अली 'निधि'

कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षित, संस्कृति से गुजराती, पिछले २२ सालों से अपनी कर्मभूमि कश्मीर श्रीनगर में समाज सेवा कर रही सुश्री नसरीन अली 'निधि' (कवियत्री एवं लेखिका) का जीवन हिंदी भाषा एवं हस्त कला को समर्पित हैं । 'वादीज हिंदी शिक्षा समिति' श्रीनगर की अध्यक्ष व मातृभाषा उन्नयन संस्थान की कश्मीर की प्रदेश अध्यक्ष हैं।

समकित सुराना वारासिवनी जिला बालाघाट निवासी गौवन्श रक्षण समिति के सक्रिय कार्यकर्ता होने के साथ विचक्षण सेवा सदन की संस्था सुप्रभात(दृष्टिहीन बच्चों का विद्यालय) के कोषाध्यक्ष व मातृभाषा उन्नयन संस्थान के भी कोषाध्यक्ष है।

समकित सुराना

शिखा अर्पण जैन

एक युवा ऊर्जावान रणनीति उत्प्रेरक, विकास के लिए रणनीति बनाने और कार्यान्वयन, लेखा परिचालनों के प्रबंधन में दक्ष श्रीमती शिखा जैन वुमन आवाज की संस्थापक हैं। साथ ही मातृभाषा उन्नयन संस्थान की संस्थापक सदस्य भी है। वर्तमान में महिला विकास और सशक्तिकरण के लिए कार्यरत हैं।

रोहित त्रिवेदी 'अवन्तिके' वरिष्ठ पत्रकार होने के साथ साथ स्तंभकार हैं। मध्यप्रदेश के उज्जैन में जन्मे और इंदौर में ही पत्रकारिता को अपनी कर्मभूमि बनाया। आपने बैचलर आफ जर्नलिज्म की उपाधी हासिल की। वर्तमान में मातृभाषा उन्नयन संस्थान में संवाद सेतु हैं।

रोहित त्रिवेदी 'अवन्तिके'

मृदुल जोशी

इंदौर निवासी मृदुल जोशी वेबसाइट और आलेख अभिकल्पी (ग्राफिक्स डिजाइनर) है। यान्त्रिकी अभियन्ता श्री जोशी हिन्दी अंग्रेजी व उर्दू भाषा में समान रूप से लेखन करते हैं। तकिनीकी रूप से दक्ष श्री जोशी वर्तमान में 'नवमसाफ्ट' के संस्थापक है। और हिन्दी ग्राम के तकनीकी सह संपादक हैं।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान की मांगे

हिन्दी भाषा को भारत की आधिकारिक 'राष्ट्रभाषा' बनाया जाए

प्रत्येक राष्ट्र के प्रतीकों के सामान ही एक राष्ट्रीय भाषा का होना भी आवश्यक हैं, २६ जनवरी १९५० में लागू संविधान में मात्र १५ वर्षों के बाद हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करने का प्रावधान था, किन्तु उनसे नहीं घोषित किया गया और फिर १९६७ में राजभाषा अधिनियम लगाया गया। चूँकि हिन्दी भारत की प्रत्येक भाषा की आत्मा है और सर्वमान्य संपर्क भाषा भी हैं। और भारत में बहुतायत में बोली जाने वाला भाषा भी हिन्दी ही है। हमारी मांग हैं कि हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा घोषित कर हिन्दी के सम्मान में अभिवृद्धि की जाएँ।

हिन्दी को सम्पूर्ण राष्ट्र में अनिवार्य शिक्षा के रूप में शामिल किया जाए

हिन्दी भाषा जब भारत के ६० प्रतिशत से अधिक हिस्से में सर्वमान्य भाषा के तौर पर स्वीकार्य है यहाँ तक कि भारत में संस्कार भी हिन्दी या मातृभाषा में ही दिए जाते है, तब हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करने के साथ हिन्दी को शिक्षा के क्षेत्र में एक अनिवार्य विषय के रूप में लागूकर प्रत्येक बोर्ड या माध्यम सहित प्रत्येक राज्यों में अनिवार्य शिक्षा के रूप में स्वीकार किया जाए।

हिन्दी भाषा के उत्थान व विस्तार हेतु उचित कानून बनाया जाए

भारत में हिन्दी के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि सहित प्रत्येक राज्यों में अनिवार्य होने की स्थिति में इसके संरक्षण और विस्तार जैसे प्रयोजनों को अम्लीयजामा पहनाने के उद्देश्य से इस भाषा को कानून के दायरे में लाया जाये। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र में स्वभाषा या राष्ट्रभाषा के लिए विशेष कानून व अधिनियम हैं। अतः भाषा को विशेष कानून के दायरे में लाना चाहिए।

शासकीय कार्यों व कार्यालयों के कार्यव्यवहार की प्रथम भाषा हिन्दी की जाए

हिन्दी भाषा जब राष्ट्र के बहुसंख्यक भूभाग की सर्वमान्य भाषा है तो प्रत्येक शासकीय कार्यों व कार्यालयों के कार्य व्यवहार, सूचना, आदेश आदि समस्त प्रक्रिया की प्रथम भाषा हिन्दी हो। शासकीय आदेशों की प्रथम सूचना हिन्दी भाषा में हो, इससे हिन्दी भाषा लोगो को रोजगार भी मिलेगा और हिन्दी भाषी लोगो तक शासकीय सूचनाएं सरलता से पहुँच सकेगी।

राष्ट्र के प्रत्येक राज्य में सड़क मार्ग पर लगे संकेतकों की प्रथम भाषा हिन्दी हो

देश के अहिन्दीभाषी राज्यों में राजमार्गो, सड़क मार्गो आदि पर लगे संकेतक, मिल के पत्थर, पथ प्रदर्शक पटल, व दिशा सूचक आदि स्थानीय भाषा में होते है, परन्तु देश की राजभाषा भी अभी तक हिन्दी ही है और उन राज्यों में जाने वाले हिन्दीभाषी लोगो की संख्या के आधार पर उन पटलों पर प्रथम भाषा हिन्दी होना चाहिए। साथ ही क्षेत्रीय या अंग्रेजी भाषा को भी स्थान दिया जाए।

भारत के न्यायालय से जारी प्रत्येक फैसले की प्रथम प्रति अनिवार्यतः हिन्दी में दी जाए

भारत की अधिकांश जनता हिन्दी भाषा में अपना कार्य व्यवहार करती है इसी सन्दर्भ में भारत की उच्चतम न्यायालय ने एक आदेश भी दिया था कि प्रत्येक न्यायालय अपने फैसले की प्रथम प्रति अनिवार्य रूप से हिन्दी में प्रदान करें, परन्तु दुर्भाग्यवश कोई भी सक्षम न्यायालय प्रथम प्रति हिन्दी में नहीं देते है। अतः उक्त आदेश का कड़ाई से पालन करवाया जाए।

भारतीय भाषा में शोध करने के लिए शोधार्थियों को विशेष शासकीय मदद दी जाए

भारत की सर्वमान्य भाषा हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं के उत्थान हेतु उनमे शोध होना परम आवश्यक हैं, और हिन्दी में शोध करने वाले लोगो को शोध करने वाले पुस्तकों आदि में बहुत खर्च करना होता है, इस कारण से वे शोध करने से कतराने लगे है। अतः सरकार द्वारा हिन्दी भाषा में शोध कर रहे शोधार्थियों को विशेष छात्रवृत्ति, पुस्तकालयों की सहायता आदि शासकीय मदद की जाए।

भारत में हिन्दी भाषा को रोजगार और व्यवसाय की अनिवार्य भाषा बनाया जाए

प्रत्येक भाषा के उत्थान और विकास के पीछे उस राष्ट्र के बाजार का बड़ा योगदान हैं, चाइनीज भाषा के व्यापक होने का कारण स्पष्ट रूप से चीन के बाजार द्वारा चाइनीज भाषा का इस्तेमाल है। भारत भी विश्व का दूसरा बड़ा बाजार है, इस स्थिति में यदि हिन्दी को रोजगारमूलक और व्यवसाय की अनिवार्य भाषा के रूप में स्वीकार किया जाएगा तो निश्चित तौर पर हिन्दी का विकास होगा।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसमे जनमानस को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित कर शपथपत्र भरवाएँ जा रहे है। हस्ताक्षर व्यक्ति के जीवन की सबसे छोटी इकाई है, और यदि व्यक्ति हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेता है तो स्वाभाविक तौर पर धीरे-धीरे उसका हिन्दी से प्रेम होना भी स्वाभाविक है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य रखकर वष २०२० तक १ करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी। वर्तमान में संस्थान द्वारा देश के ६ राज्यों में इस अभियान को प्रारंभ किया जा चुका है और लगभग ५०००० से ज्यादा लोगों ने शपथपत्र भरकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की शपथ ली हैं। हस्ताक्षर बदलो अभियान से जुड़ने के लिए देश के राजनैतिक, खेल, रंगकर्मी, चलचित्र अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, पत्रकार आदि हस्तियों से भी निवेदन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कई राज्यों में कार्य चल रहा है।

भाषा सारथी बनें

क्या आप 'भाषा सारथी' बनना चाहते हैं? क्योंकि,

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा ।
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को रोजगार दिलवाने में मदद करनी होगी।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी।
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा।
- हिन्दी के प्रचार हेतु प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा ।
- हिन्दी भाषियों की मदद करना होगी।
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना।
- कार्ययोजना बनाकर लोगो को हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित करना।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ हैं, जो हिन्दी के लिए करनी होगी, यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़े।

सहयोगी संस्थान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध

www.matrubhasha.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ

www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

वादीज़
हिन्दी शिक्षा समिति

www.wadieshindi.com

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

भाषा सारथी बनने के लिए मिस काल करें व अपना परिचय व्हाट्सअप करें

९६६९८-९६६९३

कार्यालय -
एस-२०७, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग,
इंदौर (मध्यप्रदेश) ४५२००१

संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७४५५४५५
९६४ ४४५५ ४५५ ९१७ ४४५५ ४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.hindigram.com